इकाई 7 मुद्रास्फीति : संकल्पना, प्रकार एवं मापन*

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 विषय प्रवेश

7.2 कीमत स्तर का मापन

7.2.1 सूचकांक की परिभाषा

7.2.2 सूचकांकों के प्रकार

7.3 मुद्रास्फीति की परिभाषा

7.4 मुद्रास्फीति के प्रकार

7.4.1 मध्यम मुद्रास्फीति

7.4.2 तीव्र मुद्रास्फीति

7.4.3 अति–मुद्रास्फीति

7.4.4 रुद्ध स्फीति

7.4.5 अपस्फीति

7.4.6 मूलभूत मुद्रास्फीति

7.5 सार–संक्षेप

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित बातों के लिए सक्षम होंगे:

- मुद्रास्फीति की अवधारणा की व्याख्या;
- मुद्रास्फीति का माप;
- मुद्रास्फीति को मापने के लिए विभिन्न प्रकार के कीमत सूचकांकों के बीच अंतर करना; तथा
- मुद्रास्फीति के प्रकारों की पहचान करना।

7.1 विषय प्रवेश

हम हर दिन अखबारों में मुद्रास्फीति के बारे में पढ़ते हैं। यह इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक अर्थव्यवस्था के साथ–साथ लोगों पर इसके प्रति कूल प्रभाव डालती है। एक सवाल जो इस बिंदु पर उठ सकता है वह यह है कि मुद्रास्फीति किस तरह हमारे रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करती है? आइए हम एक परिवार के उदाहरण की सहायता से इसे समझते हैं। मुद्रास्फीति, सरल शब्दों में, विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में लगातार वृद्धि है। धन की आय के स्तर को देखते हुए, एक परिवार एक दिए गए कीमत स्तर पर वस्तुओं के एक समूह का उपभोग करता है। मुद्रास्फीति के साथ, कीमत स्तर बढ़ जाता है, तो पूर्ववत् आय के साथ यह परिवार पहले की तुलना में कम मात्रा में उपभोग कर पाता है।

* डॉ० गुरलीन कौर, सहायक प्रध्यापक, श्री गुरू गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैकल्पिक रूप से, इस परिवार के उपभोग के पहले के स्तर को बनाए रखने के लिए अब अधिक धन की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि परिवार की मासिक आय रु .100 है, एक ही वस्तु A पर पूरी आय का उपभोग करता है और कुछ भी नहीं बचाता है। यदि वस्तु A की कीमत रु4 है तो परिवार में एक महीने में A की 25 इकाई का उपभोग होता है। अब मान लीजिए, वस्तु A की कीमत 4 रुपये से बढ़कर 5 रुपये हो जाती है, तो यह परिवार वस्तु A की केवल 20 इकाइयों का उपभोग करने में सक्षम होगा। परिवार को वस्तु A की प्रतिमाह 25 इकाई का उपभोग बनाए रखने के लिए, रु 125 की जरुरत पड़ेगी। इस प्रकार, हम देखते हैं कि मुद्रास्फीति के साथ, मुदों की एक इकाई पहले से कम मात्रा में सामान खरीद पाती है। दूसरे शब्दों में, मुद्रास्फीति के साथ, पैसे की क्रय शक्ति कम हो जाती है।

उपरोक्त उदाहरण में, परिवार को उपभोग में केवल एक वस्तु शामिल है। लेकिन एक विशिष्ट परिवार के लिए, उपभोग में कई प्रकार की वस्तुएं और सेवाएं शामिल होती हैं। नतीजतन, अगर कुछ अन्य वस्तुओं की कीमत में गिरावट हो जाएं एक वस्तु की कीमत में वृद्धि से घरेलू उपभोग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए, मुद्रास्फीति के प्रभाव का पता लगाने के लिए हमें परिवार द्वारा प्रयोग की जा रही सभी वस्तुओं की कीमतों में बदलाव को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसा करने के लिए, हम कीमतों के सामान्य स्तर में परिवर्तन खोजने की कोशिश करते हैं। इसलिए, मुद्रास्फीति को परिभाषित करने से पहले हमें कीमत स्तर और उसमें परिवर्तन के अर्थ को समझने की आवश्यकता है।

7.2 कीमत स्तर का मापन

हम किसी उत्पाद की 'कीमत' शब्द से परिचित हैं। 'कीमत स्तर' शब्द से हमारा क्या तात्पर्य है? दोनों के बीच क्या अंतर है? और हम कीमत स्तर को कैसे मापते हैं? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर हम वर्तमान अनुच्छेद में देने का प्रयास करेंगे।

सरल शब्दों में कीमत को उस दर के रूप में परिभाषित किया जाता है जिस पर धन के लिए वस्तुओं और सेवाओं का आदान–प्रदान किया जाता है। यह एक मुद्रा अर्थव्यवस्था में एक वस्तु (या सेवाओं) की एक इकाई को बेचने या खरीदने के लिए भुगतान की गई धनराशि है।

कीमत स्तर शब्द एक समग्र अवधारणा है। यह विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की कीमत से संबंधित है। देखें कि हम किसी एक वस्तु की कीमत का उल्लेख नहीं करते हैं, बल्कि एक सामान और सेवाओं के समूह के रूप में करते हैं। इसलिए, जब हम कीमत स्तर में बदलाव की बात करते हैं तो यह हमेशा वस्तुओं के एक समूह के संदर्भ में होती है। चूंकि वस्तुओं की कीमतें भिन्न होती हैं, इसलिए वस्तुओं के समूह के कीमत स्तर में बदलाव को मापने के लिए, सूचकांकों का उपयोग करना आवश्यक है। विशेषरूप से, हमें कीमत सूचकांक का उपयोग करना होगा। आइए हम सूचकांक के विचार को प्राथमिक रूप में समझ लें।

7.2.1 सूचकांक की परिभाषा

एक सूचकांक एक अवधारणा है जो हमें दो या अधिक समय अवधि में अलग–अलग, लेकिन संबंधित, चर के समूह में परिवर्तनों की तुलना करने में सक्षम बनाती है। एक कीमत सूचकांक का उपयोग वस्तुओं के एक समूह की कीमतों के सामान्य स्तर में परिवर्तन की तुलना करने के लिए किया जाता है। आमतौर पर एक कीमत सूचकांक समय के साथ प्राप्त कीमतों में परिवर्तन को संदर्भित करता है।

एक विशेष अवधि (जिसे 'आधार अवधि'कहा जाता है) को 100 के बराबर माना जाता है और अन्य अवधियों के लिए कीमत स्तर इस आधार के सापेक्ष व्यक्त किए जाते हैं।
उदाहरण के लिए, जब हम कहते हैं, थोक कीमत सूचकांक पिछले साल की तुलना में इस वर्ष बढ़ गया है, हम आधार या संदर्भ के रूप में पिछले वर्ष के कीमत स्तर पर ले जा रहे हैं, संदर्भ बिंदु = 100। इस के सन्दर्भ में हम इस वर्ष कीमत स्तर के परिवर्तन को मापते हैं।

किसी एक वस्तु का कीमत सापेक्ष आधार अवधि में उसकी कीमत से वर्तमान कीमत का अनुपात है। किसी दी गई वस्तु के लिए सबसे सरल कीमत सूचकांक इस रूप में व्यक्त किया जा सकता है :

$$I_{t,o} = 100\ (p_t / p_o) \qquad \dots (7.1)$$

जहां p_t और p_o क्रमशः मौजूदा समय में 't' और आधार अवधि '0' पर कीमतों को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक किलो आलू की कीमत 2017 में 8 रुपये से 2018 में 10 रुपये हो जाती है, तो इस मामले में कीमत सूचकांक होगाः

$$I_{2017,2018} = 100\ (10/8) = 125 \qquad \dots (7.2)$$

यह सूचकांक वर्ष के दौरान एक किलो आलू की कीमत में 25 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाताहै। दूसरे शब्दों में, पुराने स्तर पर आलू का उपभोग को बनाए रखने के लिए आपको 25 प्रतिशत अधिक धन की आवश्यकता है।

7.2.2 सूचकांकों के प्रकार

सूचकांक विभिन्न प्रकार के हो सकते है, जो इस के उद्देश्य और रचनाविधि पर निर्भर करते हैं। जहां तक कीमत सूचकांक का संबंध है, दो मुख्य प्रकार के कीमत सूचकांक हैंः अर्थात, थोक कीमत सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) और उपभोक्ता कीमत सूचकांक (सीपीआई)। दोनों मूल्य सूचकांकों में i) वस्तुओं और सेवाओं को शामिल करने के मामले में अलग–अलग हैं, ii) वस्तुओं और सेवाओं की प्रत्येक श्रेणी को दिए गए भार, और iii) कीमतों (चाह थोक या खुदरा) को ध्यान में रखा जाए।

सभी वस्तुओं और सेवाओं (समय और संसाधन की कमी के कारण) पर विचार करना संभव नहीं है, सूचकांक एक प्रतिदर्श सर्वेक्षण के आधार पर अनुमानित की जाती है। दो कीमत सूचकांकों का संख्यात्मक मान सूचकांक के निर्माण में शामिल वस्तुओं, प्रत्येक वस्तु भार और मूल्य सूचकांक के आधार वर्ष के अनुसार पर अलग–अलग होगा। इस प्रकार दो कीमत सूचकांकों की तुलना करते समय हमें उपरोक्त कारकों को ध्यान में रखना चाहिए। हम बाद में 'अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकीय तरीके' पाठ्यक्रम में विस्तार से सूचकांक के बारे में चर्चा करेंगे।

थोक कीमत सूचकांक (WPI)

थोक कीमत सूचकांक थोक वस्तुओं के प्रतिनिधि वस्तु समूह की कीमत है। यह सूचकांक थोक बाजार में वस्तुओं और सेवाओं की कीमत में बदलाव को मापता है। भारत में थोक कीमत सूचकांक को भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग के आर्थिक सलाहकार के कार्यालय द्वारा प्रकाशित किया जाता है।

घरेलू बाजार में थोक बिक्री के पहले बिंदु पर आंकड़े एकत्र किये जाते है। उपयोग की जाने वाली कीमतें प्राथमिक वस्तुओं के लिए थोक कीमत, ईंधन की वस्तुओं के लिए प्रशासकीय कीमतें और निर्मित उत्पादों के लिए कारखानो से निकाली गई वस्तुओं की

कीमतें हैं'। थोक कीमत सूचकांक का एक फायदा यह है कि इसका जो जनवरी 1942 में शुरू एक लंबा इतिहास है, तथा यह मुद्रास्फीति में दीर्घकालिक रुझानों का आकलन करने के लिए उपयोगी है। थोक कीमत सूचकांक कच्चे माल से लेकर तैयार विनिर्माण तक माल की एक विस्तृत श्रृंखला को भी सम्मिलित करता है।

थोक कीमत सूचकांक की एक प्रमुख सीमा यह है कि यह सेवा क्षेत्र को शामिल नहीं करता जिसका सकल घरेलू उत्पाद में बड़ा योगदान है।

उपभोक्ता कीमत सूचकांक (CPI)

उपभोक्ता कीमत सूचकांक सामान और सेवाओं के सामान्य कीमत स्तर में समय के साथ बदलाव का मापन करता है जो घरों में उपभोग के उद्देश्यों के लिए प्राप्त किए जाते हैं। भारत में उपभोक्ता कीमत सूचकांक का व्यापक रूप से उपयोग इन कार्यों हेतु किया जाता है i) मुद्रास्फीति का एक वृहद आर्थिक संकेतक, ii) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण के लिए एक उपकरण के रूप में, iii) कर्मचारियों के महंगाई भत्ते के सूचकांक के लिए, सरकार द्वारा कीमत स्थिरता की निगरानी के लिए, और iv) राष्ट्रीय आय खातों के लिए अपस्फायक के रूप में। उपभोक्ता कीमत सूचकांक का प्रकाशन केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय (CSO), भारत सरकार द्वारा किया जाता है। आपने अखबारों और विभिन्न रिपोर्टों में 'शीर्षक मुद्रास्फीति' के बारे में देखा होगा। यह व्यापक उपभोक्ता कीमत सूचकांक के आधार पर मुद्रास्फीति को संदर्भित करता है।

बोध प्रश्न – 1

1) यदि कोई देश मुद्रास्फीति का सामना कर रहा है, तो मौद्रिक राष्ट्रीय उत्पाद में परिवर्तन होगा। यह
   क) मुद्रास्फीति की दर की तुलना में तेजी से गिरेगा
   ख) वास्तविक राष्ट्रीय उत्पाद में परिवर्तन के बराबर रहेगा
   ग) राष्ट्रीय आय के मूल्य का न्यूनांकन करेगा
   घ) उत्पादन के वास्तविक मूल्य में परिवर्तन का अधि–अंकन करेगा

   ....

   ....

   ....

   ....

2) थोक कीमत सूचकांक और उपभोक्ता कीमत सूचकांक में भेद स्पष्ट करें।

   ....

   ....

   ....

   ....

7.3 मुद्रास्फीति की परिभाषा

कीमतों और कीमत स्तर की पृष्ठभूमि के साथ हम मुद्रास्फीति की परिभाषा पर चलते हैं। हमने पहले उल्लेख किया है कि मुद्रास्फीति को निरंतर वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है अर्थात्, कीमतों के सामान्य स्तर में लगातार वृद्धि की ओर एक प्रवृत्ति के रूप में। विशेषण 'निरंतर' पर ध्यान दिया जाना चाहिए इसका कारण यह है कि यदि कीमत स्तर

आज बढ़ जाता है लेकिन कल गिरता है तो यह मुद्रास्फीति नहीं हो सकता है, बल्कि यह कीमतों में केवल अल्पकालिक उतार–चढ़ाव है। 'सामान्य कीमत स्तर' शब्द भी महत्वपूर्ण है क्योंकि कुछ समय के दौरान कुछ वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि हुई है जबकि कुछ अन्य वास्तव में गिर सकती हैं। परिणामस्वरूप, कुल मिलाकर, इन कीमतों का औसत स्थिर रह सकता है या नीचे भी जा सकता है।

इसी प्रकार यदि वस्तुओं के एक समूह की कीमत, जो अर्थव्यवस्था के उत्पादन के कुल मूल्य के एक छोटे से अंश का गठन करती है, में वृद्धि का अर्थ मुद्रास्फीति के रूप में नहीं होना आवष्यक नहीं है। अर्थात्, ऐसी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि का प्रभाव बहुत कम हो सकता है कि सभी वस्तुओं के औसत कीमत स्तर को प्रभावित किया जा सके। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुद्रास्फीति एक वृहद आर्थिक घटना है और इसका संबंध किसी विशेष वस्तु की कीमत में वृद्धि या वस्तुओं के एक छोटे समूह से नहीं है।

अनुच्छेद 7.1 में, यह इंगित किया गया था कि मुद्रास्फीति में कैसे निश्चित धन आय वाले एक परिवार को प्रभावित करने की संभावना है। हालांकि, कई मामलों में, कुछ आय वर्ग वास्तव में मुद्रास्फीति से लाभान्वित होते हैं या कम से कम इस से अप्रभावित रह सकते हैं। हम अगली इकाई में मुद्रास्फीति के कारणों और प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

7.4 मुद्रास्फीति के प्रकार

मुद्रास्फीति की गंभीरता या, कीमतों में तेजी की दर के आधार पर हम मुद्रास्फीति को तीन अलग–अलग प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं, जैसे, मध्यम, सरपट और अति–मुद्रास्फीति इसके अलावा, कुछ अन्य संबंधित अवधारणाएं हैं जिन के बारे में हम नीचे चर्चा करते हैं।

7.4.1 मध्यम मुद्रास्फीति

जब सामान्य कीमत स्तर धीरे–धीरे लेकिन निरंतर रूप से बढ़ता है, तो इसे मध्यम मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है। भारत के मामले में, मौद्रिक नीति समिति (MPC) प्रतिवर्ष 4 प्रतिशत की दर से मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण का समर्थन करती है। लक्ष्य के अनुसार मुद्रास्फीति की दर प्रति वर्ष 2 से 6 प्रतिशत की सीमा के बाहर नहीं होनी चाहिए।

7.4.2 तीव्र मुद्रास्फीति

निरंतर सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि की उच्च दर को तीव्र मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है। मुद्रास्फीति की दर दो अंकों (20 प्रतिशत, 40 प्रतिशत, आदि) में और कभी–कभी तीन अंकों (यानी, 200 प्रतिशत) के रूप में उच्च हो सकती है। ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे कुछ लैटिन अमेरिकी देशों ने 1970 के दशक में मुद्रास्फीति की दर 100 प्रतिशत से अधिक अनुभव की थी।

7.4.3 अति मुद्रास्फीति

अति –मुद्रास्फीति एक ऐसी स्थिति है जहां कीमत वृद्धि बहुत तेज होती है, ये तेजी से स्थानीय मुद्रा के वास्तविक मूल्य को मिटाती है, और निवासियों को स्थानीय धन के अपने स्वामित्व को कम करने के लिए मजबूर करती है। आमतौर पर यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था में होता है जो युद्धों और उनके बाद होने वाले सामाजिक–राजनीतिक उथल–पुथल या अन्य संकट का सामना कर रही हो। इन स्थितियों में सरकार द्वारा निवासियों पर कर लगाना बहुत मुश्किल होता है, जिसके कारण सरकार को घाटा होता है और सरकार को मुख्य रूप से कराधान या उधार लेने के बजाय इसे मुद्रा सृजन के माध्यम से पूरा करना पड़ता है।

इतिहास में ऐसे मामले सामने आए हैं जब एक–डेढ़ साल के भीतर कीमत सूचकांक 100 से 10,000,000,000 तक पहुंच गया! ऐसी स्थितियों में, मुद्रा मूल्य का भंडार होने के साथ–साथ विनिमय का माध्यम भी नहीं रह पाती।

विभिन्न देशों में अति मुद्रास्फीति के कई उदाहरण हैं। 1980 के दशक के दौरान ब्राज़ील में अति मुद्रास्फीति थी। 2008–09 के दौरान अति मुद्रास्फीति का एक ताजा उदाहरण जिम्बाब्वे है, जहां कीमतें एक दिन से अगले दिन तक लगभग दोगुनी हो गई हैं।

जनता अपने धन को अपने पास मुद्रा के रूप में रखने के बजाय उसे अपने भोजन और दूसरी आवश्यकताओं पर खर्च करती थी, क्योंकि पैसे का मूल्य तेजी से कम हो रहा था। कुछ रिपोर्टों के अनुसार, 2008 में मुद्रास्फीति की दर का अनुमान लगाना असंभव था – नवंबर 2008 में यह लगभग 79.6 बिलियन प्रतिशत थी। इसके परिणामस्वरूप, देश ने अपनी मुद्रा को त्याग दिया और 2009 में लेनदेन के लिए विदेशी मुद्राओं के उपयोग की अनुमति दी।

7.4.4 रुद्ध स्फीति (stagflation)

रुद्ध स्फीति शब्द उस स्थिति को संदर्भित करता है जहां एक अर्थव्यवस्था में वास्तविक उत्पादन बहुत धीमी गति से या शून्य दर (स्थिर) पर बढ़ता है और कीमतें बढ़ती रहती हैं। रुद्ध स्फीति के दुष्प्रभाव – कीमतों में वृद्धि या मुद्रास्फीति के साथ बेरोजगारी में प्रकट होते हैं । यह आर्थिक दुविधा को जन्म देता है क्योंकि कम मुद्रास्फीति के लिए तैयार किए गए कार्यों से बेरोजगारी और इसके विपरीत हो सकता है। यह 1970 के दशक के दौरान हुआ, जब कच्चे तेल की कीमतों में नाटकीय रूप से हुई वृद्धि ने विकसित अर्थव्यवस्थाओं में तेज मुद्रास्फीति को बढ़ावा दिया।

7.4.5 अपस्फीति

अपस्फीति एक ऐसी स्थिति है जहां कीमतें लगातार गिरती हैं या उनमें गिरने की प्रवृत्ति होती है। यह तब उत्पन्न हो सकती है जब कुल मांग कुल आपूर्ति से कम हो। इस प्रकार, अपस्फीति उत्पादन में कमी, बेरोजगारी में वृद्धि और आर्थिक गतिविधियों के सामान्य धीमा होने की विशेषता है। पूंजीवादी देशों में 1929 से 1933 तक का महामंदी एक तीव्र अपस्फीति का उदाहरण है जब कीमतें अचानक से गिर गईं, बेरोजगारी बहुत उच्च स्तर तक बढ़ गई और इन देशों की सकल घरेलू उत्पाद तेजी से गिर गई। अर्थशास्त्रियों का आमतौर पर मानना है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में अपस्फीति खतरनाक है क्योंकि यह ऋण के वास्तविक कीमत को बढ़ा सकती है, खासकर अगर अपस्फीति अप्रत्याशित हो। इसके अलावा, अपस्फीति अर्थव्यवस्था में उत्पादन को हतोत्साहित करती है क्योंकि कीमतें गिरती रहती हैं।

7.4.6 मूलभूत मुद्रास्फीति

अस्थायी कीमत अस्थिरता को हटाने के बाद मुद्रास्फीति के माप को 'मूलभूत मुद्रास्फीति' के रूप में जाना जाता है। यदि अस्थायी उच्चावचन का ध्यान रखा जाता है, तो वे अनुमानित समग्र मुद्रास्फीति अंको को प्रभावित कर सकते हैं। ये वास्तविक मुद्रास्फीति संख्या के साथ मेल नहीं खा पाएगा। इस संभावना को खत्म करने के लिए, मूलभूत मुद्रास्फीति को अस्थायी झटके और अस्थिरता को हटाकर वास्तविक मुद्रास्फीति का आकलन करने के लिए उपयुक्त माना जाता है।

भारत में मुख्य मुद्रास्फीति की गणना खाद्य उत्पादों को छोड़कर निर्मित उत्पादों की कीमत वृद्धि के आधार पर की जाती है। इस प्रकार इसमें कृषि वस्तु, ईंधन और ऊर्जा, खाद्य उत्पाद आदि शामिल नहीं हैं।

बोध प्रश्न – 2

1) आधार वर्ष के बाद के वर्षों में कीमत सूचकांकः
   क) कभी 100 नहीं होता।
   ख) हमेशा 100 से अधिक रहता है।
   ग) हमेशा 100 से कम रहता है।
   घ) 100 से कम, अधिक या इसके बराबर हो सकता है।

   ....

   ....

2) 2017 में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक 111.5 था और 2018 में 114.1 था। महंगाई दर है।
   क) 2.3%
   ख) 2.6%
   ग) 112.8
   घ) अपर्याप्त जानकारी

   ....

   ....

7.5 सार–संक्षेप

मुद्रास्फीति में कीमत स्तर लगातार बढ़ता है। जब कीमत स्तर में वृद्धि होती है, तो धन की क्रय शक्ति में गिरावट आती है। कीमत स्तर में बदलाव को मापने के लिए हम कीमत सूचकांक की मदद लेते हैं। एक सूचकांक अलग–अलग, लेकिन संबंधित, दो या अधिक समय अवधि में चर के समूह की तुलना करने के लिए एक उपकरण है। कीमत सूचकांक मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं, थोक कीमत सूचकांक और उपभोक्ता कीमत सूचकांक।

अपस्फीति का अर्थ है कीमत स्तर में लगातार गिरावट। अति –मुद्रास्फीति बहुत अधिक मुद्रास्फीति की स्थिति है, जो युद्ध के बाद या किसी अर्थव्यवस्था में गंभीर आर्थिक संकट के कारण उत्पन्न हो सकती है। अति मुद्रास्फीति के दौरान मुद्रास्फीति की अधिकांश लागतों की गंभीरता बढ़ जाती है। आमतौर पर अति मुद्रास्फीति के साथ अर्थव्यवस्था में वास्तविक आय की वृद्धि में ठहराव की स्थिति को रुद्ध स्फीति कहा जाता है। मूलभूत मुद्रास्फीति एक मुद्रास्फीति माप है जो कुछ वस्तुओं जैसे खाद्य पदार्थों, ऊर्जा उत्पाद आदि के मामले में कीमत उच्चावचन को शामिल नहीं करता है।

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) घ)
2) उप–भाग 7.4.3 और 7.4.4 का अध्ययन करें और उत्तर लिखें।

बोध प्रश्न 2

1) घ)
2) क)
3) उप–भागों 7.3.1 और 7.3.2का अध्ययन करें और उत्तर लिखें।
4) उप– भाग 7.3.3 का अध्ययन करें और उत्तर लिखें।

इकाई 8 मुद्रास्फीति के कारण और प्रभाव*

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 विषय प्रवेश

8.2 मुद्रास्फीति के कारण

8.2.1 मांग–जनित मुद्रास्फीति

8.2.2 आपूर्ति–जनित मुद्रास्फीति

8.2.3 मुद्रा के परिमाण का सिद्धांत

8.2.4 मुद्रास्फीति का संरचनात्मक सिद्धांत

8.3 मुद्रास्फीति के प्रभाव

8.3.1 देनदार और लेनदार

8.3.2 निश्चित आय समूह

8.3.3 व्यापारी और निवेशक

8.3.4 कृषक

8.3.5 सरकार

8.4 अवस्फीति (dis-inflation) की कीमत

8.5 सार–संक्षेप

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस स्थिति में होंगे कि

- मुद्रास्फीति के प्रमुख कारणों की व्याख्या कर सकें;
- मांग जनित मुद्रास्फीति और आपूर्ति जनित मुद्रास्फीति के बीच अंतर कर सकें;
- मुद्रा के परिमाण सिद्धांत और मुद्रास्फीति के संरचनात्मक सिद्धांत की व्याख्या कर पाएं; तथा
- विभिन्न वर्गों पर मुद्रास्फीति के प्रभाव की व्याख्या कर पाएं।

8.1 विषय प्रवेश

पिछली इकाई में हमने मुद्रास्फीति की अवधारणा और प्रकारों के बारे में बताया। इस इकाई में हम मुद्रास्फीति के कारणों और प्रभावों पर चर्चा करेंगे। नोबेल पुरस्कार विजेता मिल्टन फ्रीडमैन के अनुसार, "मुद्रास्फीति हमेशा और हर जगह मौद्रिक घटना ही होती है"। इससे उनका आशय यह था कि जब काफी समय तक, मुद्रा की आपूर्ति आर्थिक संवृद्धि से

* डॉ० गुरलीन कौर, सहायक प्राध्यापक, श्री गुरू गोविंद सिंह कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय

अधिक बनी रहती है तो मुद्रास्फीति होती है। मुद्रावादी मुद्रास्फीति को "too much money chasing too few goods" मानते हैं। मुद्रा आपूर्ति के अलावा कई अन्य कारक हैं जो मुद्रास्फीति का कारण बनते हैं। इसके अलावा, जैसा कि हम नीचे चर्चा करेंगे, मुद्रास्फीति समाज के विभिन्न वर्गो को अलग तरह से प्रभावित करती है।

8.2 मुद्रास्फीति के कारण

मुद्रास्फीति के अंतर्निहित कारणों को आम तौर पर उस स्रोत के रूप में बताया जाता है जिसके माध्यम से मुद्रास्फीति उत्पन्न होती है। आपने व्यष्टि अर्थशास्त्र से सीखा है कि वस्तु की कीमत उस स्तर पर निर्धारित की जाती है जहां आपूर्ति मांग के बराबर होती है। यदि मांग अधिक आपूर्ति से होती है तो कीमत में वृद्धि होती है। दूसरी ओर, यदि आपूर्ति मांग से अधिक है, तो कीमत कम हो जाएगी। दोनों तरह की स्थिति में कीमत का समायोजन होता है। हालांकि, एक मामले में परिवर्तन का स्रोत मांग पक्ष से उत्पन्न होता है जबकि दूसरे मामले में आपूर्ति पक्ष से उत्पन्न होता है। इसी तरह की प्रक्रिया कुल मांग और कुल आपूर्ति के मामले में भी लागू होती है। प्रारंभिक प्रक्रिया के आधार पर, हम मुद्रास्फीति को दो प्रकारों में वर्गीकृत करते हैं, अर्थात

(i) मांग–जनित या मांग–पक्ष मुद्रास्फीति, और

(ii) लागत–प्रेरित या आपूर्ति–पक्ष मुद्रास्फीति।

8.2.1 मांग–जनित मुद्रास्फीति

जो कारक कुल मांग में वृद्धि करते हैं, (जबकि कुल आपूर्ति में कोई वृद्धि नहीं होती है), मांग–पक्ष या मांग–जनित मुद्रास्फीति का कारण बन सकते है। कीन्सियन दृष्टिकोण के अनुसार, मांग–जनित मुद्रास्फीति तब होती है, जब कुल मांग उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर पर कुल आपूर्ति से अधिक हो जाती है, जिससे कुल मांग (C + I + G) और उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर के बीच संबद्ध को मुद्रास्फीति का कारण माना जाता है।

(i) उपभोग में वृद्धि (आय में वृद्धि, बचत में कमी या कर की दर में कमी), (ii) निवेश (ब्याज दर में कमी के कारण) होने पर कुल मांग में वृद्धि होगी। व्यापार भावनाओं में आशावाद), और (iii) सरकारी व्यय में वृद्धि। याद रखें कि कीनेसियन फ्रेमवर्क में समग्र आपूर्ति वक्र शुरू में क्षैतिज, फिर ऊपर की ओर उठता हुआ, और फिर चर्चा के तहत समय अवधि के आधार पर ऊर्ध्वाधर है (रेखाचित्र 8.1 में LRAS)। आइए हम मानते हैं कि कुल मांग का वर्तमान स्तर AD_1 है। संतुलन कीमत स्तर P_1 है और वास्तविक उत्पादन का स्तर Y_1 है। जैसा कि आप आरेख 8.1 से देख सकते हैं, उत्पादन स्तर Y_1 पर, उत्पादन क्षमता का उपयोग कम है। दूसरे शब्दों में, अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार स्तर Y_{FE} से नीचे चल रही है। इस स्थिति में कुल मांग (AD1 से AD2 तक) में वृद्धि (उदाहरण के लिए, सरकारी खर्च में वृद्धि के कारण) से वास्तविक उत्पादन (Y_1 से Y_2 तक) में वृद्धि होगी। आपको ध्यान देना चाहिए कि इस स्थिति में कीमतों में कोई वृद्धि नहीं होती है क्योंकि आपूर्ति वक्र असीम रूप से लोचदार है (रेखाचित्र 8.1 में LR वक्र का क्षैतिज भाग)।

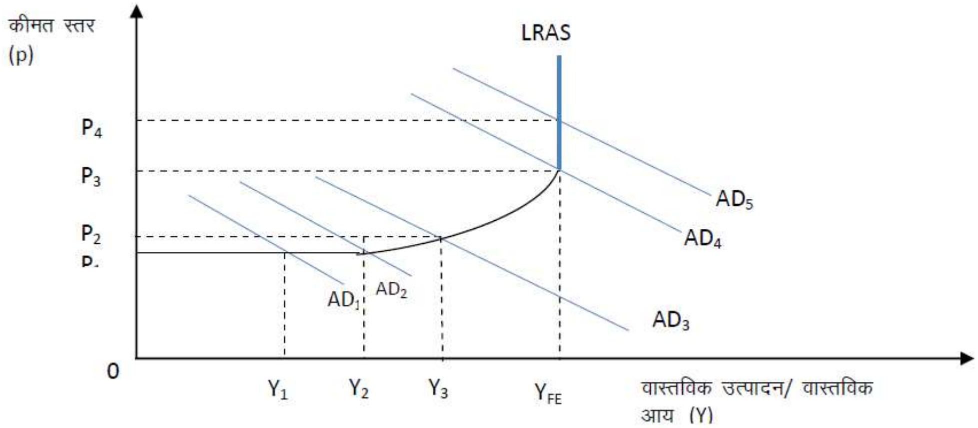

रेखाचित्र 8.1 मांग जनित मुद्रास्फीति

सरकारी खर्चों में और बढ़ोतरी से उत्पादन और कीमतों में बढ़ोतरी होगी। AD वक्र में AD2 से AD3 तक बदलाव से वास्तविक उत्पादन Y2 से Y3 तक बढ़ेगा। लेकिन कीमत स्तर भी बढ़ जाएगा (P1 से P2 तक)। ऐसा इसलिए है क्योंकि निर्माता मौजूदा कीमत P1 पर अधिक आपूर्ति करने के लिए तैयार नहीं हैं; वे उत्पादन Y3 की आपूर्ति केवल उच्च कीमत पर करने के लिए तैयार हैं, अर्थात P2। यदि AD में AD3 से AD4 तक वृद्धि होती है तो परिणाम समान है। इस स्तर पर, अर्थव्यवस्था उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर (Y_{FE}) के करीब पहुंच रही है; कुछ उत्पादन इकाइयों में कुछ अतिरिक्त क्षमता होती है, लेकिन अन्य उत्पादन इकाइयां पूर्ण क्षमता पर चल रही होती हैं। ऐसी स्थिति के तहत कुल मांग में वृद्धि से कुछ उद्योगों में कीमत वृद्धि होगी, और इसलिए जब AD बढ़ती है तो औसत कीमत स्तर में वृद्धि होगी। आगे, जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार उत्पादन पर होती है, तो AD में वृद्धि (AD4 से AD5 तक), उत्पादन के स्तर में किसी भी वृद्धि के बिना कीमत वृद्धि ही होगी।

8.2.2 आपूर्ति–पक्ष मुद्रास्फीति

आपूर्ति–जनित मुद्रास्फीति का कीनेसियन सिद्धांत आपूर्ति–पक्ष कारकों जैसे कि मजदूरी दर में वृद्धि या कच्चे माल की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि को मुद्रास्फीति का मूल कारण मानता हैं। कीमत–जनित मुद्रास्फीति को आमतौर पर मजदूरी मुद्रास्फीति प्रक्रिया के रूप में माना जाता है क्योंकि मजदूरी उत्पादन की कुल कीमत का एक बड़ा हिस्सा है। शक्तिशाली और लड़ाकू ट्रेड यूनियन अक्सर उच्च मजदूरी के लिए सौदेबाजी करती हैं। यदि मजदूरी दर में वृद्धि श्रम की उत्पादकता में वृद्धि दर के समान है, तो उत्पादन की औसत कीमत में वृद्धि नहीं होती है। यदि ट्रेड यूनियन उत्पादकता वृद्धि से मेल नहीं खाती, उच्च मजदूरी वृद्धि पर बातचीत करने में सफल होती हैं, तो उत्पादन की कीमत बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति उत्पादकों को उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों को बढ़ाने के लिए मजबूर करती है। इस तरह की मुद्रास्फीति को मज़दूरी–जनित मुद्रास्फीति के रूप में जाना जाता है। मज़दूरी–जनित मुद्रास्फीति के लिए एक पूर्व–आवश्यकता श्रम का संघ बद्ध होना है।

अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति का सामना करने वाले श्रमिक, अक्सर मजदूरी दर में वृद्धि की मांग करते हैं। निर्माता अक्सर ऐसी मांगों का अनुपालन करते हैं। जैसे–जैसे उत्पादन की कीमत बढ़ती है, कंपनियां उत्पाद की कीमतें बढ़ाती हैं। इसके अलावा, कंपनियां इसलिए भी अपने उत्पादों की कीमत बढ़ाती हैं ताकि उन्हें अधिक लाभ हो सके।

जब वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें बढ़ जाती हैं, तो श्रमिक कीमत वृद्धि की भरपाई के लिए उच्च्च मजदूरी की मांग करते हैं। इस प्रक्रिया में, मजदूरी दर और कीमतों में वृद्धि की एक श्रृंखला बन जाती है। इस तरह की स्थिति एक मजदूरी–कीमत कुंतल पेचदार की ओर ले जाती है। कीमतें बढ़ाने के लिए फर्मों के लिए एक पूर्व–आवश्यकता बाजार की अपूर्णता है। कई प्रतिस्पर्धियों वाले बाजार में, एक फर्म के पास कीमतें बढ़ाने की गुंजाइश सीमित रह जाती है।

मान लीजिए कि AD कुल मांग वक्र है और AS1 कुल आपूर्ति वक्र है। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था संतुलन उत्पादन Y1 और संतुलन कीमत स्तर P1 (रेखाचित्र 8.2 देखें) पर कार्य करती है। मान लीजिए कि उत्पादन की कीमत में वृद्धि के कारण AS1 से AS2 तक कुल आपूर्ति वक्र में बदलाव आता है। AS वक्र में बदलाव यह दर्शाता है कि समान स्तर की आपूर्ति अब केवल उच्च कीमत पर की जा सकती है। नया संतुलन बिंदु E' है जिसमें संतुलन उत्पादन Y2 और संतुलन कीमत स्तर P2 है। ध्यान दें, इस मामले में, उत्पादन में गिरावट और कीमत स्तर में वृद्धि होती है।

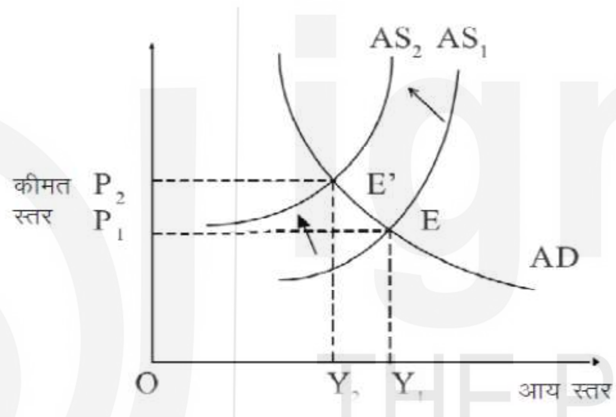

रेखाचित्र 8.2 कीमत–जनित मुद्रास्फीति

8.2.3 मुद्रा का परिमाण सिद्धांत

ऊपर चर्चा कीनेसियन अर्थशास्त्रियों द्वारा की गई व्याख्या को दर्शाती है। हालांकि मुद्रावादी दृष्टिकोण केनेसियन स्पष्टीकरण से अलग है। मुद्रावादी मुद्रास्फीति के कारणों को समझाने के लिए 'मुद्रा–परिमाण सिद्धांत' (BECC 103 की इकाई 5 में चर्चा की गई) का उपयोग करते हैं। मुद्रा के परिमाण सिद्धांत में उपयोग किए गए 'विनिमय के समीकरण' को याद करें।

$MV = PY$

जहां परः

- M = अर्थव्यवस्था में संचलन में मुद्रा की परिमाण
- Y = वास्तविक राष्ट्रीय आय
- P = कीमत स्तर
- V = संचलन का वेग, वह गति जिस पर मुद्रा अर्थव्यवस्था में परिचालित होती हैं।

मुद्रा का परिमाण सिद्धांत दो मान्यताओं पर आधारित है, अर्थात (i) मुद्रा 'तटस्थ है, और (ii) संचलन का वेग (V) किसी भी स्थिति के लिए स्थिर है। बाजार की द्वंद्वात्मकता के आधार पर मुद्रा की तटस्थता का तात्पर्य यह है कि मुद्रा की आपूर्ति में परिवर्तन उत्पादन

के स्तर को प्रभावित नहीं करते हैं। मुद्रवादिओं का तर्क है कि उत्पादन (Y) एक वास्तविक चर है, जो केवल वास्तविक कारकों द्वारा संचालित होता है। सकल उत्पादन (Y) स्थिर है (AS वक्र लंबवत (vertical) है) क्योंकि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार है। मजदूरी दर और कीमतों में लचीलेपन के माध्यम से पूर्ण रोजगार बनाए रखा जाता है।

मौद्रिक नीति कैसे काम करती है? इस स्पष्टीकरण को सरल बनाने के लिए विनिमय के समीकरण का उपयोग किया जाता है। विनिमय के समीकरण के दो पहलू हमेशा संतुलन में होने चाहिए। यदि V स्थिर है और Y को M में वृद्धि से नहीं बदला जा सकता है, तो समीकरण का एकमात्र भाग जिसे M में वृद्धि से बदला जा सकता है। वह P है। अगर सेंट्रल बैंक ने M को बढ़ाने के लिए मुद्रा की आपूर्ति में वृद्धि की तो, इसका परिणाम P में आनुपातिक वृद्धि होना है। मुद्रा और कीमतों के बीच लंबे समय तक चली प्रवृत्तियां, मुद्रावादी दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं कि मुद्रा की आपूर्ति के विस्तार से मुद्रास्फीति उच्च हो सकती है, और मुद्रा आपूर्ति के उचित विनियमन द्वारा मुद्रास्फीति को रोका जा सकता है। ।

8.2.4 मुद्रास्फीति का संरचनात्मक सिद्धांत

मुद्रास्फीति का संरचनात्मक सिद्धांत, जैसा कि मिर्डल, स्ट्रीटन और कई अन्य लैटिन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया है, आमतौर पर संवृद्धिशील अर्थव्यवस्थाओं में पाए जाने वाले संरचनात्मक कारकों या संरचनात्मक कठोरता को मुद्रास्फीति की घटना का श्रेय देता है। संरचनात्मक सिद्धांत संसाधन अंतर को संदर्भित करता है (यानी, बचत निवेश से कम है), भोजन की कमी (वर्षा पर कृषि की निर्भरता के कारण), विदेशी मुद्रा की कमी और खराब ढांचागत सुविधाएं)। मुद्रास्फीति के संरचनात्मक सिद्धांत के अनुसार ये सभी संरचनात्मक कारक, संवृद्धिशील देशों में मुद्रास्फीति के वास्तविक कारण हैं।

1970 के दशक में संरचनात्मक सिद्धांत सामने आया था जब दुनिया में बढ़ती बेरोजगारी (गतिरोध) के साथ बढ़ती कीमतों की स्थिति का सामना हुआ था, कुछ ऐसा जो मांग–जनित सिद्धांतों से स्पष्ट नहीं हो सकता था। यह देखा गया कि 1970 के दशक में दो तेल कीमत के झटके, जो अनिवार्य रूप से आपूर्ति पक्ष के झटके थे (क्योंकि उन्होंने उत्पादन की कीमत में वृद्धि की थी), ऐसी स्थिति पैदा करने में सक्षम रहे थे। संरचनात्मक अर्थशास्त्री, अपनी ओर से तर्क देते हैं कि कम विकसित देशों में, मुद्रा के अलावा, आपूर्ति और मांग की स्थिति जैसे संरचनात्मक कारक भी कीमत निर्धारित करने में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मुद्रा के विस्तार के माध्यम से सार्वजनिक निवेश के वित्तपोषण से उत्पादक क्षमता और वास्तविक उत्पादन में वृद्धि होती है, जबकि वास्तविक उत्पादन, एक ही समय में, मुद्रा की मांग को भी बढ़ाता है। इसके अलावा, सरकार के वास्तविक सार्वजनिक व्यय के एक वांछित स्तर को बनाए रखने की चिंता के कारण सरकार के नामिक खर्च में वृद्धि होती है जिससे कीमतों में और आगे वृद्धि होती है।

यद्यपि इस विचार की आलोचना हुई है, हमें वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति के महत्व से इनकार नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए अनुसंधान और संवृद्धि को प्रोत्साहित करके उत्पादकता बढ़ाने के लिए सरकार का हस्तक्षेप, लंबी अवधि में मुद्रास्फीति का मुकाबला करने में अच्छा योगदान दे सकता है।

बोध प्रश्न – 1

1) निम्नलिखित मिलान करें:

1.	मुद्रास्फीति	क	जब अधिक मांग के कारण मुद्रास्फीति होती है
2.	अति मुद्रास्फीति	ख	औसत कीमत स्तर में निरंतर वृद्धि
3.	मांग–जनित मुद्रास्फीति	ग	मुद्रास्फीति उत्पादन कीमत में वृद्धि के कारण मुद्रास्फीति
4.	कीमत– जनित मुद्रास्फीति	घ	कीमत स्तर में तेजी से वृद्धि

....

....

2) तेल की कीमतों में वृद्धि, जैसे कि 1970 के दशक में तेल के झटके, ———————— को जन्म देते हैं, जिससे ———————— पैदा होता है।

क) AS वक्र पर चलन; कीमत – बढ़ोत्तरी मुद्रास्फ़ीति

ख) AS वक्र में एक बाईं ओर बदलाव; प्रेरित मुद्रा स्फीति की मांग

ग) AS वक्र में एक दायीं ओर बदलाव; लागत – प्रेरित मुद्रास्फ़ीति

घ) AS वक्र में एक बाईं ओर बदलाव; कीमत – प्रेरित मुद्रास्फ़ीति

....

....

3) मांग–जनित और कीमत–जनित मुद्रास्फीति के बीच भेद स्पष्ट करें।

....

....

....

....

8.3 मुद्रास्फीति का प्रभाव

मुद्रास्फीति मुद्रा के कीमत को कम करती है जिससे क्रय शक्ति का क्षरण होता है। यदि किसी व्यक्ति की नाममात्र आय मुद्रास्फीति की दर से अधिक दर से बढ़ रही है, तो उसकी वास्तविक आय (यानी, कीमत स्तर से विभाजित नाममात्र आय) बढ़ जाएगी। दूसरी ओर, यदि किसी व्यक्ति की नाममात्र आय मुद्रास्फीति की दर से कम दर पर बढ़ रही है, तो उसकी वास्तविक आय घट रही है।

मोटे तौर पर, हर समाज में दो आर्थिक समूह होते हैं, निश्चित आय समूह और परिवर्तनीय आय समूह। निश्चित आय समूह आमतौर पर मुद्रास्फीति के साथ अपनी वास्तविक आय में गिरावट से पीड़ित होता है। दूसरी ओर, परिवर्तनीय आय वाले लोग जैसे उद्योगपति, व्यापारी, अचल संपत्ति धारक और सट्टेबाजों को बढ़ती कीमतों के दौरान लाभ हो सकता है। सामान्यतया, मुद्रास्फीति से समाज का कौन सा आय वर्ग लाभ या हानि प्राप्त करता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कौन मुद्रास्फीति का अनुमान लगाता है और कौन नहीं।

जो लोग मुद्रास्फीति का सही अनुमान लगाते हैं, वे अपनी वर्तमान आय, उधार और उधार गतिविधियों को तदनुसार समायोजित कर सकते हैं।

कुछ लोगों को, (मुख्य रूप से गरीब पृष्ठभूमि से,) नकदी रखने की आदत है; यहां तक कि वे इसे उच्च मुद्रास्फीति के दौरान भी ऐसा ही करते हैं। मुद्रास्फीति के दौरान मुद्रा का कीमत कम हो जाता है; यह, नकदी रखने से जुड़ी कीमत है। ऐसी सुविधा के लिए लागत को अक्सर 'मुद्रास्फीति कर' कहा जाता है। यह सरकार को दिया जाने वाला वास्तविक कानूनी कर नहीं है; बल्कि यह उच्च मुद्रास्फीति के समय नकदी रखने के लिए दंड को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि आपने नकद रु 1,000 में और मुद्रास्फीति की दर 10 प्रतिशत है। एक वर्ष के बाद, आपके पास रखी नकदी समान ही होगी (अर्थात, रु1000), जबकि मुद्रा की क्रय शक्ति में 10 प्रतिशत की कमी होगी (अर्थात, जो वस्तुएं रु100 में उपलब्ध हैं, उनकी कीमत एक साल बाद रु110 होगी)। इस प्रकार, आपके पास मौजूद नकदी की क्रय शक्ति आज की कीमतों में केवल 900 रह जाएगी।

यदि कोई निवेशक प्रतिभूतियों, अचल संपत्ति या अन्य परिसंपत्तियों को धारण कर रहा है, तो मुद्रास्फीति का प्रभाव नगण्य हो सकता है। हम समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर मुद्रास्फीति के प्रभाव के नीचे चर्चा करते हैं।

8.3.1 देनदार और लेनदार

बढ़ती कीमतों के दौरान, देनदार (debtor) लाभ उठाते हैं और लेनदार (creditor) नुकसान जाते हैं। जब कीमतें बढ़ती हैं तो पैसे का कीमत गिर जाता है। हालांकि देनदार समान राशि वापस करते हैं, लेकिन वे वस्तुओं और सेवाओं (या वास्तविक मुद्रा) के मामले में कम भुगतान करते हैं।

ऐसा इसलिए है क्योंकि जब वे पैसे उधार लेते हैं तो पैसे का कीमत कम होता है। इस प्रकार, ऋण का बोझ कम हो जाता है और देनदार लाभ प्राप्त करते हैं।

दूसरी ओर, लेनदार नुकसान जाते हैं। हालाँकि उन्हें उसी मुद्रा की राशि वापस मिल जाती है जिसे उन्होंने उधार दिया था, वे वास्तविक रूप से कम प्राप्त करते हैं क्योंकि मुद्रा का कीमत गिर जाता है। इस प्रकार, मुद्रास्फीति लेनदारों की कीमत पर देनदारों के पक्ष में वास्तविक मुद्रा के पुनर्वितरण को लाती है।

8.3.2 निश्चित आय समूह

मुद्रास्फीति होने पर निश्चित वेतन वाले व्यक्ति नुकसान में रहते हैं। कारण यह है कि कीमतें बढ़ने पर समायोजित करने में उनका वेतन धीमा रहता है। श्रमिकों को उस गति के आधार पर लाभ या हानि हो सकती है जिसके साथ उनका वेतन बढ़ती कीमतों के लिए समायोजित होता है। यदि श्रमिक संघ मजबूत होते हैं, तो श्रमिक अपने वेतन को जीवन सूचकांक की कीमत से जोड़ सकते हैं। इस तरह, श्रमिक मुद्रास्फीति के दुष्प्रभावों से खुद को बचाने में सक्षम हो सकते हैं। कर्मचारियों द्वारा वेतन बढ़ाने और कीमतों में वृद्धि के बीच अक्सर एक समय अंतराल होता है। इस प्रकार, श्रमिक कुछ न कुछ खो देते हैं क्योंकि जब तक मजदूरी में बढ़ोतरी होती है, तब तक जीवन सूचकांक की कीमत और बढ़ जाती है। इसके अलावा, अगर श्रमिकों ने एक निश्चित अवधि के लिए संविदात्मक मजदूरी में प्रवेश किया है, तो भी वे घाटे में रहते हैं क्योंकि अनुबंध की अवधि के दौरान कीमतें बढ़ती रहती हैं। कुल मिलाकर, वेतन पाने वाले कर्मचारी भी सफेदपोश श्रमिकों के समान स्थिति में हैं।

हस्तांतरण भुगतान जैसे पेंशन, बेरोजगारी लाभ, सामाजिक सुरक्षा इत्यादि और ब्याज प्राप्त करने वाले पूर्व निर्धारित आय पर रहते हैं।

ऐसे सभी व्यक्तियों के मुद्रास्फीति के दौरान नुकसान होता है क्योंकि उन्हें एक अवधि के लिए निश्चित भुगतान प्राप्त होता है, जबकि पैसे के कीमत में गिरावट जारी है।

8.3.3 व्यापारी और निवेशक

उत्पादक, व्यापारी और अचल संपत्ति धारकों को स्फीति के दौरान लाभ रहता है। उत्पादकों के मामले पर चर्चा करते हैं। कीमत वृद्धि से वस्तुओं के भंडार के मूल्य में भी उसी अनुपात में वृद्धि हो जाती है। इसलिए, उनकी बिक्री बढ़ने पर उनका मुनाफा बढ़ता है। यही हाल अल्पकाल में व्यापारियों का भी है। लेकिन उत्पादकों को दूसरे तरीके से अधिक लाभ प्राप्त होता है – लागतें उत्पादन कीमतों के समान अनुपात में नहीं बढ़ती हैं। इसका कारण यह है कि मजदूरी दर और कुछ कच्चे माल की कीमतें एक अंतराल के बाद ही बढ़ पाती हैं। स्थावर सम्पदा के मालिक मुद्रास्फीति के दौरान लाभान्वित होते हैं क्योंकि सामान्य संपत्ति की तुलना में भू–संपत्ति की कीमतें आमतौर पर तेजी से बढ़ती हैं।

8.3.4 कृषक

कृषक तीन प्रकार के होते हैं, जैसे, जमींदार, किसान मालिक, और भूमिहीन कृषि श्रमिक। जमींदार बढ़ती कीमतों के दौरान नुकसान में रहते हैं क्योंकि उन्हें निश्चित किराए मिलते हैं। किसान मालिक, हालांकि, जो अपने खेतों को अपनाते हैं और खेती करते हैं, लाभ में रहते है। उच्च मुद्रास्फीति की अवधि के दौरान, कृषि उत्पादों की कीमतें उत्पादन की कीमत की तुलना में तेजी से बढ़ती हैं – मजदूरी की दर और भूमि राजस्व उसी तरह नहीं बढ़ते हैं जैसे कि कृषि उपज की कीमतों में वृद्धि होती है। भूमिहीन कृषि श्रमिकों, पर बढ़ती कीमतों से कड़ी चोट पड़ती हैं। उनका वेतन खेत मालिकों द्वारा बढ़ाया नहीं; सरकार अक्सर न्यूनतम मजदूरी को संशोधित नहीं करती है और व्यापार संघवाद उनके बीच अनुपस्थित है।

8.3.5 सरकार

सरकार कर्जदार के रूप में उन परिवारों की लागत पर लाभ उठाती है जो इसके प्रमुख लेनदार हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि सरकारी बॉन्ड पर ब्याज दरें तय रहती हैं और कीमतों में बढ़ोतरी की भरपाई के लिए उन्हें उठाया नहीं जाता है। हालांकि परिवार कर दाताओं के रूप में लाभ प्राप्त होता है। करों का भुगतान एक अंतराल के साथ किया जाता है, वर्ष के दौरान अर्जित आय पर, और मुद्रास्फीति के कारण करों का वास्तविक कीमत कम हो जाता है।

इस प्रकार, सरकार के साथ काम करते समय परिवारों पर शुद्ध प्रभाव का आंकलन जटिल रहता है। लेनदारों के रूप में, उनकी संपत्ति के वास्तविक कीमत और कर–दाताओं के रूप में, उनकी देनदारियों के वास्तविक मूल्य में मुद्रास्फीति के दौरान गिरावट आती है।

8.4 अवस्फीति (dis-inflation) की कीमत

पिछले अनुच्छेद में हमने देखा कि मुद्रास्फीति के परिणामस्वरूप से आय के पुनः वितरण निम्न आय वर्ग सबसे अधिक पीड़ित हैं। उच्च मुद्रास्फीति के कारण लोगों में असंतोष देखा गया है; यह कभी–कभी कई देशों में राजनीतिक अस्थिरता और सरकार गिरने का कारण भी बना है। इस प्रकार, मुद्रास्फीति के परिणाम न केवल आर्थिक हैं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक भी हैं। इसे देखते हुए, नीति निर्माता हमेशा मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं। वास्तव में, भारत सहित कई देशों ने मौद्रिक नीति के एकमात्र उद्देश्य के रूप में मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण (inflation targeting) को आगे बढ़ाया है। जब उच्च मुद्रास्फीति होती है, तो सरकार को एक कड़ी मौद्रिक नीति अपनानी होती है ताकि कुल

मांग नियंत्रण में आ जाए। नीतियों को मुद्रास्फीति की दर में कमी, यानी अवस्फीति (dis-inflation), यानी महंगाई में कमी की ओर बढ़ाया जाता है।

उच्च मुद्रास्फीति की अवधि के दौरान, सरकारी राजस्व सरकारी खर्चों की तुलना में कम रह जाता है जिसके परिणामस्वरूप बड़ा राजकोषीय घाटा होता है। घाटा के लिए सरकार के पास तीन विकल्प होते हैंः जनता से उधार लेना, विदेशी मुद्रा आरक्षित भंडार घटाना, और मुद्रा के वित्त पोषण छापना। आमतौर पर भारी घाटे में चल रही सरकार पहले से ही भारी कर्ज में डूबी होती है और अधिक ब्याज दे रही होती है। इसलिए, आगे उधार लेना मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, ऐसी सरकारों के पास विदेशी मुद्रा भंडार भी कम होता है और इसलिए, मुद्रा मुद्रित करना एक आसान विकल्प बन जाता है जो मुद्रास्फीति की दर को बढ़ाता है। आप 1990–91 में भारतीय हालत को याद कर सकते हैं जब यह भारी कर्ज में डूबा हुआ था, विदेशी मुद्रा भंडार अचानक कम हो गया था, और दोहरे अंकों में मुद्रास्फीति थी। सामान्य तौर पर, उच्च मुद्रास्फीति अर्थव्यवस्था को विकास क्रम से बाहर कर देती है और आर्थिक स्थिरता को बनाए रखना मुश्किल हो जाता है।

मुद्रास्फीति की दर को कम करने के लिए, एक अर्थव्यवस्था में नीति निर्माताओं को उपभोग और निवेश पर प्रतिबंध लगाने और सरकारी व्यय में कटौती के माध्यम से कुल मांग को कम करना है। जब निवेश (निजी और सार्वजनिक दोनों) कम हो जाता है, तो आर्थिक संवृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है (याद रखें कि निवेश में कमी के लिए गुणक प्रभाव भी काम करता है)। इसके अलावा, निवेश में गिरावट के साथ, देश में बेरोजगारी बढ़ेगी। वास्तव में, फिलिप्स वक्र' (किसी अन्य इकाई में चर्चा की जाने वाली) मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच संबंध का वर्णन करती है। व्यावहारिक रूप से यह देखा गया है कि मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच विलोम संबंध कम से कम अल्पावधि में तो अवश्य होता है। फिलिप्स वक्र का एक निहितार्थ यह है कि मुद्रास्फीति की कम दर तभी संभव है जब सरकार बेरोजगारी की उच्च दर को स्वीकार करने के लिए तैयार हो।

इस प्रकार, अल्पावधि में मुद्रास्फीति और बेरोजगारी के बीच एक सम प्रत्ययन हो सकता है। उच्च बेरोजगारी समस्याओं का एक और समूह भी अपने साथ लाती है – निम्न आर्थिक संवृद्धि, बढ़ती गरीबी, सामाजिक असंतोष और राजनीतिक अस्थिरता की संभावना।

त्याग-अनुपात (sacrifice-ratio)

धीमी आर्थिक वृद्धि राजकोषीय लक्ष्यों पर दबाव डालती है – राजस्व उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है क्योंकि संवृद्धि दर धीमी हो जाती है जबकि कीमत बढ़ने के कारण सरकारी व्यय बढ़ जाता है।

उच्च राजकोषीय घाटा न केवल मुद्रास्फीति, बल्कि सरकारी ऋण का भी स्रोत है। बहुत बार हम मुद्रास्फीति की कीमत को 'त्याग अनुपात' के संदर्भ में मापते हैं, जिसे निम्नानुसार परिभाषित किया गया हैः

त्याग-अनुपात = (उत्पादन का प्रतिशत नुकसान) / (मुद्रास्फीति की दर में गिरावट)

उदाहरण के लिए, एक देश के लिए, मुद्रास्फीति में 2 प्रतिशत की गिरावट आई, जबकि उत्पादन में 5 प्रतिशत की गिरावट आई। इस प्रकार, त्याग का अनुपात 5/2 है, अर्थात 2.5 है। त्याग अनुपात संभावित उत्पादन को इंगित करता है जिसको मुद्रास्फीति को एक प्रतिशत तक कम करने के लिए त्याग करना पड़ता है।

शीत टर्की (Cold Turkey) या क्रमवाद (Gradualism)

अवस्फीति (dis-inflation) की प्रक्रिया में, एक सवाल उठता हैः क्या नीति निर्माताओं को मुद्रास्फीति की दर में तेजी से गिरावट का पक्ष लेना चाहिए या उन्हें ऐसी नीति का पालन करना चाहिए कि मुद्रास्फीति में कमी क्रमिक (gradual) रहे। पारम्परिक अर्थशास्त्रियों का सुझाव है कि अवस्फीति की प्रक्रिया तेज होनी चाहिए – इस रणनीति को कभी–कभी कोल्ड टर्की या शीत टर्की कहा जाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कीमतें घटाने की सरकारी नीति दिखाई देनी चाहिए, और लोगों में यह विश्वास आना चाहिए कि सरकार ईमानदारी से मुद्रास्फीति को कम करने की कोशिश कर रही है। इस प्रक्रिया यह अपेक्षित मुद्रास्फीति कम होगी। हालांकि केनेसियन अर्थशास्त्री एक 'क्रमिक दृष्टिकोण' का सुझाव देते हैं, क्योंकि अर्थव्यवस्था में कई टकराव होते हैं। अर्थव्यवस्था में कई मजदूरी अनुबंध होते हैं जिन्हें समाप्त होने के लिए समय की आवश्यकता होती है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था को सरकार द्वारा निर्धारित नए मुद्रास्फीति लक्ष्य को समायोजित करने के लिए कुछ समय की आवश्यकता होती है। समायोजन की अवधि के दौरान बेरोजगारी दर बहुत अधिक हो सकती है। कीनेसियन दृष्टिकोण के अनुसार, शीत टर्की दृष्टिकोण मुद्रास्फीति की उम्मीदों को कम नहीं कर सकती, क्योंकि लोगों को संदेह हो सकता है कि क्या मुद्रास्फीति को इतनी तेज़ी से नीचे लाना संभव है। इसके अलावा, उनके अनुसार, मुद्रास्फीति में तेजी से गिरावट की कीमत उच्च बेरोजगारी और राजनीतिक रूप से अस्थिर होने के संदर्भ में बहुत अधिक होगी।

बोध प्रश्न – 2

1) अप्रत्याशित मुद्रास्फीति से होगी (सही उत्तर पर टिक करें)

   क) कर्जदारों पर चोट।

   ख) लेनदारों पर चोट।

   ग) उधारकर्ताओं और उधारदाताओं को समान रूप से चोट।

   घ) उधारकर्ताओं या उधारदाताओं पर कोई प्रभाव नहीं।

2) एक अर्थव्यवस्था के लिए अवस्फीति की कीमत का एक संक्षिप्त विवरण दें।

   ....

   ....

   ....

   ....

8.5 सार–संक्षेप

मुद्रास्फीति के मुख्य रूप से दो प्रकार हैंः मांग–मुद्रा मुद्रास्फीति और कीमत–जनित मुद्रास्फीति। दोनों प्रकार की मुद्रास्फीति एक अर्थव्यवस्था के भीतर समग्र कीमत स्तर में वृद्धि का कारण बनती है। मांग–जनित मुद्रास्फीति तब होती है जब अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है।

दूसरी ओर, कीमत–जनित मुद्रास्फीति, तब होती है जब उत्पादन प्रक्रिया/कारक आदानों की कीमतें बढ़ जाती हैं। तेजी से मजदूरी बढ़ जाती है या कच्चे माल की बढ़ती कीमतें

इस प्रकार की मुद्रास्फीति का सामान्य कारण हैं। लंबे समय में मुद्रा आपूर्ति के विस्तार के कारण भी मुद्रास्फीति होती है। हालांकि, व्यापार चक्र, अंतरराष्ट्रीय तेल की कीमतें, विनिमय दरों में परिवर्तन आदि जैसे कई कारक हैं; जो अल्पावधि में मुद्रास्फीति के कारण बन सकते हैं। इसके अलावा, हमने मुद्रास्फीति के संरचनात्मक सिद्धांत से सीखा है कि संरचनात्मक कारक, जैसे बचत–निवेश की खाई, भोजन की कमी, विदेशी मुद्रा की कमी, ढांचागत अड़चनें आदि, कम विकसित देशों में मुद्रास्फीति के वास्तविक कारण हैं।

मुद्रास्फीति के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ हैं। मुद्रास्फीति से धन का पुनः वितरण होता है, आमतौर पर अमीरों के पक्ष में। इसके अलावा, हमने समाज के विभिन्न वर्गों पर मुद्रास्फीति के प्रभाव पर चर्चा की। समाज के कुछ समूह दूसरों की तुलना में महंगाई से अधिक प्रभावित होते हैं। आमतौर पर, निश्चित आय वाले लोगों, जैसे, श्रमिक, वेतनभोगी व्यक्ति, शिक्षक, पेंशनभोगी, ब्याज और किराए से निर्वाह करने वाले को मुद्रास्फीति के दौरान बदतर बना दिया जाता है क्योंकि उनकी आय कीमतों जितनी तेजी से नहीं बढ़ती है।

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न – 1

1) 1–ख 2–घ 3–क 4–ग
2) घ
3) कीनेसियन दृष्टिकोण के अनुसार, मांग–जनित मुद्रास्फीति तब होती है जब कुल मांग उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर पर कुल आपूर्ति से अधिक हो जाती है, जिससे कुल व्यय (C + I + G) और उत्पादन के पूर्ण रोजगार स्तर के बीच संबंध के लिए मुद्रास्फीति होती है। उप–भाग 8.2.1 देखें। कीमत–जनित मुद्रास्फीति का केंजीय सिद्धांत, मुद्रास्फीति के मूल कारण को कारकों की आपूर्ति करने के लिए प्रेरित करता है, विशेष रूप से इस संभावना से कि उत्पादन कीमत बढ़ने से मुद्रास्फीति को बढ़ावा मिलेगा। उप–भाग 8.2.2 देखें।

बोध प्रश्न – 2

1) ख
2) भाग 8.3 का संदर्भ लें और उत्तर दें।